Vol 6 Issue 12 Jan 2017

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 4.1625(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2017

''एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम में स्थानीय भाषा एवं परिवेश से जोड़ने पर शिक्षकों की भूमिका''

श्रीमती किरण मिश्रा[1] , प्रो. राजेन्द्र तिवारी[2]
[1]सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग संत अलायसियस स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर
[2]सेवानिवृत्त डीन. शिक्षा संकाय, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

सारांश :

शिक्षा जगत में आदिकाल से ही शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिक्षक ही वह माध्यम है जो ज्ञान को प्रभावशाली ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचाता है एवं उनका सर्वांगीण विकास करता है। कुशल शिक्षक बनाने में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का विशेष महत्व रहा है। समय–समय पर भारत में विभिन्न सामाजिक, सांस्कतिक एवं वैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होकर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में परिवर्तन किया गया है। एन.सी.एफ.टी.ई. (2009) ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किए एवं पाठ्यक्रम का विकास किया। शोधकर्त्ता ने अपने शोध के माध्यम से एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम में स्थानीय भाषा एवं परिवेश से जोड़ने पर शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन किया। प्रश्नावली से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर 100 शिक्षकों के अनुभवों का विश्लेषण किया। परिणामों की व्याख्या व विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि स्थानीय भाषा एवं परिवेश से पाठ्यक्रम को जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

प्रस्तावना–

शिक्षा जगत में आदिकाल से ही शिक्षकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षक ऐसा कार्यक्षेत्र है जिनके कंधे पर देश के भविष्य का निर्माण करना होता है। साहित्यों में भी शिक्षकों को मूर्तिकार/बढ़ई की संज्ञा दी गई है जो कच्ची मिट्टी को भिन्न–भिन्न रूपों में निर्मित करता है। अच्छे शिक्षक बनाने का कार्य अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम को सौंपा गया जिससे हमारे समाज की आवश्यकता एवं समय के अनुरूप शिक्षक तैयार किए जा सकें। समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न परिवर्तन किए गए है।

श्रीमती किरण मिश्रा

अध्यापकों के उचित प्रशिक्षण एवं विकास के लिए उचित पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जिससे सफल शिक्षक बनाएँ जा सकें। सफल शिक्षक न केवल विषय सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाता है अपितु विद्यार्थी की आवश्यकता एवं योग्यता को देखते हुए उनका सर्वांगीण विकास भी करता है।

भारत विविधताओं का देश है यहाँ कोस–कोस में भाषागत विभिन्नता दिखाई देती है ऐसी स्थिति में एक ऐसे प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिसके द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान कर सकें। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों का स्थानीयता से सार्वभौमिकता की ओर विकास कर सकेगा। जाधव, मेघा सहब्राओं तथा पटनकार, डॉ. प्रतिमा एस (2013) ने कोल्हापुर में अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम विकास में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य पाठ्यक्रम विकासकर्त्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका की व्याख्या एवं पाठ्यक्रम विकास की उपयुक्तता के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त करना था। निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ कि पाठ्यक्रम का निर्माण एवं विकास की प्रक्रिया विकेन्द्रित होना चाहिए जिससे अधिक से अधिक शिक्षक अपनी भागीदारी दे सकें। जिला एवं राज्य के अनुसार पाठ्यक्रम विकास की बात की जिससे स्थानीय सत्रोतों के उपयोग से पाठ्यक्रम का विकास हो जिससे विद्यार्थी अधिक लाभान्वित हो। पाण्डेय, डॉ. सरोज (2014) ने भारत में अध्यापक शिक्षा के व्यवसायी करण, पुनः निर्माण तथा प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और

VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2017

पाया कि भारत की शिक्षा को मुख्य रूप से दो आयोगों ने प्रभावित किया– शिक्षा आयोग 1964–66 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 भारत में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में निरंतर संशोधन होते रहे है जिनका आधार हमारी संस्कृति, भाषा, भौगोलिक विविधता एवं तकनीक है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि जहाँ एक ओर पाठ्यक्रम को उन्नत तकनीकी ज्ञान एवं सम्प्रेषण से जोड़ा जाना चाहिए वहीं उसे स्थानीय संस्कृति, भाषा तथा भौगालिक विविधता के अनुसार भी होना चाहिए।

शिक्षक वह नहीं जो किसी कक्षा को ज्ञान प्रदान करें अपितु अच्छा शिक्षक वह है जो कक्षा में उपस्थित विभिन्न बालकों का विकास कर सकें। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों में ऐसे कौशलों का विकास करने का प्रयास करता है जिससे वह विभिन्न विद्यार्थियों का उचित विकास कर सकें। भारत विविधताओं का देश है यहाँ भाषा, संस्कृति, संसाधन एवं रहन–सहन सभी में विविधता पाई जाती है अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षार्थी में ऐसे गुणों का विकास किया जाना आवश्यक है जिससे वह अपने कार्यक्षेत्र में जाकर विद्यार्थी की स्थानीय आवश्यकता व भाषा का ध्यान रखकर शिक्षण प्रदान कर सकें जिससे विद्यार्थियों का उत्तरोत्तर विकास किया जा सकें। अतः शोधकर्त्ता ने ऐसे विषय का चुनाव किया जिससे स्थानीय आवश्यकता भाषा, एवं स्त्रोत संबंधी शिक्षकों के प्रत्युत्तर प्राप्त हो सकें एवं बी.एड. पाठ्यक्रम को व्यावहारिक धरातल पर अधिक सफल बनाया जा सके।

उद्देश्यः–

शोध कार्य की सफल परिणति के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1.एन.सी.एफ.टी.ई. (2009) द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय भाषा से जोड़ने पर शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन।

2.एन.सी.एफ.टी.ई. (2009) द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय परिवेश से जोड़ने पर शिक्षक की भूमिका का अध्ययन।

परिकल्पनाएँः–

परिकल्पना एक तर्कपूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा ली जा सकती हे। अतः निम्न परिकल्पनाएँ बनाई गई–

1.एन.सी.एफ.टी.ई. (2009) द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय भाषा से जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2.एन.सी.एफ.टी.ई. (2009) द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय परिवेश से जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

न्यादर्श :– 100 बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक

उपकरण :–

स्वनिर्मित प्रश्नावली

जिसमें (i) स्थानीय भाषा संबंधी कथन

(ii) स्थानीय परिवेश संबंधी कथन, सम्मलित है।

शोध विधि :– आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। विभिन्न विद्यालयों में यादृच्छिक विधि से चुने हुए 100 शिक्षकों द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली में प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की एवं शिक्षकों के सुझाव प्राप्त किए गए। प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर विश्लेषण कर परिणामों की व्याख्या की गई।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–प्रस्तुत शोध कार्य हेतु आँकड़ों के आधार पर परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है –

तालिका क्रमांक–01
स्थानीय भाषा संबंधी परिणाम

प्रश्नों की कुल संख्या	प्रतिक्रियाएँ आवृत्ति					χ^2	सार्थकता
	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्ण असहमत		
13	394	484	206	151	66	463.70	<0.01

स्थानीय भाषा संबंधी कुल 13 कथनों के प्राप्त प्राप्तांकों की गणना करने पर ज्ञात हुआ कि कुल 1300 प्रतिक्रियाओं में से 878 शिक्षकों ने स्थानीय भाषा के उपयोग एवं प्रभावशीलता के प्रति सहमति व्यक्त की जबकि 217 शिक्षकों ने असहमति व्यक्त की एवं 206 शिक्षकों ने कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं दी अतः स्थानीय भाषा के प्रति 67.53 प्रतिशत शिक्षकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया यह प्रदर्शित करती है कि स्थानीय भाषा के प्रयोग से विद्यार्थी अधिक समझता है एवं अधिक सीखता है अर्थात् शिक्षण प्रभावशीलता बढ़ती है। प्राप्तांकों का काई वर्ग निकालने पर 463.70 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर को प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय भाषा से जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता'' सत्यापित नहीं होती।

VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2017

तालिका क्रमांक–02
स्थानीय परिवेष संबंधी परिणाम

प्रश्नों की कुल संख्या	प्रतिक्रियाएँ आवृत्ति					χ^2	सार्थकता
	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्ण असहमत		
11	302	388	206	130	74	293.44	<0.01

स्थानीय परिवेश संबंधी कुल 11 कथन से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 1100 प्रतिक्रियाओं में से 690 प्रतिक्रियाएँ सकारात्मक है अर्थात् 62.72 प्रतिशत शिक्षकों का यह मानना है कि स्थानीय परिवेश एवं स्त्रोतों से जोड़कर शिक्षण करने में बालक अधिक सीखता है 204 प्रतिक्रियाएँ असहमति का समर्थन करती है जबकि 206 प्रतिक्रियाएँ अनिश्चित है। अतः स्थानीय स्त्रोतों एवं परिवेश से जोड़कर शिक्षण करने से शिक्षण प्रभावशाली होता है एवं विद्यार्थी के हित में होता है। कुल प्राप्तांकों का काई वर्ग का मान 293.44 प्राप्त हुआ जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर प्रदर्शित करता है। अतः परिकल्पना ''एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 द्वारा प्रस्तुत बी.एड. पाठ्यक्रम को स्थानीय परिवेश से जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता'' सत्यापित नहीं होता है।

अतः प्राप्त परिणाम प्रदर्शित करते है कि जब शिक्षक शिक्षण कार्य के समय स्थानीय भाषा का उपयोग करता है अथवा स्थानीय परिवेश से जोड़कर पढ़ाता है तो विद्यार्थी रूचिपूर्ण ढंग से एवं सरलता से सीखते है अतः स्थानीय भाषा का उपयोग एवं परिवेश शिक्षण प्रभावशीलता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

निष्कर्ष–

आँकड़ों से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण कर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि–

(1) शिक्षण कार्य के दौरान स्थानीय भाषा का प्रयोग करने से विद्यार्थी अधिक सहजता से सीखता है एवं उसके अधिगम स्तर में वृद्धि होता है अतः स्थानीय भाषा के उपयोग द्वारा शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

(2) शिक्षण प्रक्रिया में यदि स्थानीय परिवेश, वातावरण एवं स्थानीय स्त्रोतों को ध्यान में रखकर शिक्षण किया जाए तो कक्षा में रूचिपूर्ण वातावरण को निर्माण होता है एवं शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होती है। स्थानीय उदाहरणों द्वारा प्रभावशाली ढंग से शिक्षण किया जाता है अतः पाठ्यक्रम को स्थानीय परिवेश से जोड़ने पर शिक्षण प्रभावशीलता मे वृद्धि होती है।

संदर्भ ग्रंथ –

1.Jadhav, Megha Sahebrao & Patankar, Pratibha, Role of Teachers in curriculum development for teacher education, On line docucment..

2.Krishna Kumar (1987), Curriculum, Psychology and society. Economic and Political Weekly, vol XXII, No12, PP 507.

3.National Curriculum Framework for Teacher Education, NCTE Document 2009-10, secretary NCTE, Document Press, New Delhi.

4.Pandey, Dr. Saroj (2014), Professionatization of teacher education in India. A critique of teacher education curriculum reforms and its effectiveness,NCERT New Delhi.online document.

5.राय, पारसनाथ, राय सी.पी. (2011) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, पृ. 95–96।

6.शर्मा, ओ.पी., सिंह रामपाल (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 146–150।

7.सोनी, राम गोपाल (1998) उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा के नए आयाम, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, प्रथम संस्करण, पृ. 4।

8.शर्मा, आर.ए. चतुर्वेदी शिखा,(2005) अध्यापक प्रशिक्षण का विकास, सूर्या पब्लिकेशन, आर लाल बुक डिपो, पृ.9।

9.यादव, सियाराम, (1998) पाठ्यक्रम विकास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण, पृ. 4।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org